

सत्रीय कार्य पुस्तिका  
विज्ञान में स्नातक उपाधि कार्यक्रम (बी.एससी.)  
में  
ऐच्छिक पाठ्यक्रम

पादप विविधता-II

1 जनवरी, 2024 से 31 दिसंबर, 2024 तक वैध

सत्रांत परीक्षा के लिए फार्म भरने से पहले सत्रीय कार्य  
जमा करना अनिवार्य है।

कृपया ध्यान दें

- बी.एससी. कार्यक्रम में ऐच्छिक पाठ्यक्रम चार विषयों – रसायन विज्ञान, भौतिकी, गणित और जीव विज्ञान – में उपलब्ध हैं। ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के कुल क्रेडिट 56 या 64 कम से कम दो और अधिकतम चार विषयों, में से हो सकते हैं।
- आपके द्वारा चुने गए किसी भी विषय में आपको कम से कम 8 क्रेडिट के ऐच्छिक पाठ्यक्रम लेने होंगे। किसी भी विषय में आप अधिक से अधिक 48 क्रेडिट के ऐच्छिक पाठ्यक्रम ले सकते हैं।
- आप भौतिकी, रसायन तथा जीव विज्ञान के ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के जितने कुल क्रेडिट लेते हैं, उनमें से कम से कम 25 प्रतिशत प्रयोगशाला पाठ्यक्रमों के होने चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप इन तीन विषयों में कुल 64 क्रेडिट के पाठ्यक्रम लेते हैं, तो इनमें से कम से कम 16 क्रेडिट प्रयोगशाला पाठ्यक्रमों के होने चाहिए।
- किसी पाठ्यक्रम में पंजीकरण कराए बिना आप उसकी सत्रांत परीक्षा में नहीं बैठ सकते। अगर आप ऐसा करते हैं तो उस पाठ्यक्रम का परीक्षाफल रोक दिया जाएगा और इसका दायित्व भी आप पर ही होगा।



विज्ञान विद्यापीठ  
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

(2024)

प्रिय विद्यार्थी,

हम उम्मीद करते हैं कि स्नातक उपाधि कार्यक्रम में अपनायी गयी मूल्यांकन पद्धति से आप भली-भांति परिचित हैं। आपके नामांकन के बाद हमने आपको ऐच्छिक पाठ्यक्रम की एक कार्यक्रम दर्शिका भेजी थी। उसमें सत्रीय कार्य से संबंधित जो भाग हैं उसे कृपया दुबारा पढ़ लें। जैसा कि आप जानते हैं निरन्तर मूल्यांकन के लिए 30% अंक निर्धारित किये गये हैं। इसके लिए आपको एक सत्रीय कार्य करना होगा। यह सत्रीय कार्य इस पुस्तिका में शामिल है।

### सत्रीय कार्य से संबंधित निर्देश

इससे पहले कि आप किसी प्रश्न का उत्तर लिखें, निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

1) अपनी उत्तर पुस्तिका के पहले पृष्ठ पर सबसे ऊपर निम्नलिखित प्रारूप के आधार पर विवरण लिखें।

---

नामांकन संख्या : .....

नाम : .....

पता : .....

.....

पाठ्यक्रम संख्या : .....

.....

पाठ्यक्रम शीर्षक : .....

सत्रीय कार्य संख्या : .....

अध्ययन केंद्र : ..... दिनांक : .....

---

कार्य के सही और शीघ्र मूल्यांकन के लिए दिये गये प्रारूप का सही अनुसरण करें।

- 2) अपना उत्तर लिखने के लिए फुलस्कैप कागज़ का इस्तेमाल करें, जो ज़्यादा पतला न हो।
- 3) प्रत्येक कागज़ पर बायें, ऊपर और नीचे 4 से. मी. की जगह छोड़ें।
- 4) आपके उत्तर स्पष्ट होने चाहिए।
- 5) प्रश्नों के हल लिखते समय, स्पष्ट संकेतों द्वारा बताएं कि किस प्रश्न का कौनसा भाग हल किया जा रहा है।
- 6) यह सत्रीय कार्य 1 जनवरी, 2024 से लेकर 31 दिसम्बर, 2024 तक वैध है। इस सत्रीय कार्य पुस्तिका के मिलने के 12 हफ्तों के अन्दर ही सत्रीय कार्य पूरा करने की कोशिश कीजिए, ताकि सत्रीय कार्य का एक शिक्षण साधन की तरह उपयोग हो सके। निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त होने वाली उत्तर पुस्तिकाओं को स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- 7) परीक्षा फार्म भरने से पहले सत्रीय कार्य करना अनिवार्य है।

अपनी उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी ज़रूर रखिए।

शुभकामनाओं के साथ।

**सत्रीय कार्य**  
**(अध्यापक जांच सत्रीय कार्य)**

पाठ्यक्रम कोड : LSE-13  
सत्रीय कार्य कोड : LSE-13/TMA/2024  
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पर लघु टिप्पणियां लिखिए। (2½×8=20)
  - i) कवकमूल v) कीटभक्षी पादप
  - ii) लघुबीजाणुजनन vi) द्विनिषेचन
  - iii) भ्रूणोद्भव vii) चूषकांग
  - iv) टैक्सस के औषधीय उपयोग viii) पर्णाभवृंत
2. क) जिम्नोस्पर्मस तथा एन्जियोस्पर्मस के बीच में भिन्नताओं को लिखिए। (5)  
ख) जिम्नोस्पर्मस में जीवन चक्रों को समुचित आरेखों के साथ वर्णन कीजिए। (5)
3. गुरुबीजाणुधानी, गुरुबीजाणुजनन और मादा युग्मकोद्भिद का वर्णन कीजिए। (10)
4. वर्णन कीजिए कि कैसे *नीटम* बहुत से मायनों में एन्जियोस्पर्मस से मिलता है? (10)
5. क) रेजिन क्या है और उनके स्रोतों का उल्लेख कीजिए। (5)  
ख) भारत के पाँच प्रमुख काष्ठ उत्पादक कॉनिफर वृक्षों के नाम लिखिए। (5)
6. निम्नलिखित के सुनामांकित चित्र बनाइए: (2½×4=10)
  - i) आर्किड की जड़ की अनुप्रस्थ काट
  - ii) प्ररोह शीर्ष की संरचना
  - iii) *रिसीनस* के बीजपत्राधर (hypocotyl) की अनुप्रस्थ काट
  - iv) *साइकस* की प्रवाल मूल
7. रुबिएसी और ऐस्टरेसी कुलों के आर्थिक महत्व के बारे में संक्षेप में लिखिए। (10)
8. निम्नलिखित शब्दों के युग्मों में अंतर बताइए: (4×5=20)
  - i) स्तरित और अस्तरित एधा
  - ii) पटलीय और रिक्तका स्थूल कोणोतक
  - iii) समव्यासी दृढ़क और गुरुदृढ़क
  - iv) वाहिनी और वाहिका अवयवों
  - v) सरल और संयुक्त चालनी क्षेत्र